Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान–पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

हिन्दी तथा अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

विषय सूची

1.	संधि एवं संधि विच्छेद	1
2.	उपसर्ग	24
3.	प्रत्यय	59
4.	समास	77
5.	शब्द शुद्धि	95
6.	व्याकरणीय अशुद्धियों का शुद्धिकरण	110
7.	शब्द युग्मों के अर्थ भेद	121
8.	पर्यायवाची शब्द	131
9.	विलोम शब्द	149
10.	वाक्य शुद्धि	157
11.	वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द	169
12.	पारिभाषिक शब्दावली	185
13.	मुहावरे	188
14.	लोकोक्ति	201
15.	रचना एवं रचनाकार	215

Contents

1. **Basics of English** **222**
2. **Correction of Common Errors** **256**
3. **Synonyms & Antonyms** **279**
4. **Idiom & Phrases** **282**
5. **Reading Comprehension** **299**

संधि

– दो वर्णो के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।

संधि – सम् + धि

अर्थात् दो निकटवर्ती वर्णो के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता हैं। वह संधि कहलाता हैं।

या

पास-पास स्थित पदों के समीप विद्यमान वर्णो के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

संधि के तीन भेद होते हैं –

(i) स्वर संधि
(ii) व्यंजन संधि
(iii) विसर्ग संधि

1. स्वर संधि :-

स्वर के साथ स्वर के मेल को स्वर संधि कहते हैं।

या

जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता हैं तब जो परिवर्तन होता हैं, उसे स्वर संधि कहते हैं।
हिंदी में ग्यारह स्वर होते हैं।

स्वर संधि के प्रकार

(i) दीर्घ स्वर संधि
(ii) गुण स्वर संधि
(iii) वृद्धि स्वर संधि
(iv) यण स्वर संधि
(v) अयादि स्वर संधि

1. दीर्घ स्वर संधि :- (दो समान स्वरों का मेल)

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के पश्चात् क्रमशः ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आए तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं, जैसे —

राम + आधार	=	रामाधार	(अ + आ = आ)
विद्या + आलय	=	विद्यालय	(आ + आ = आ)
काम + अरि	=	कामारि	(अ + अ = आ)
गिरि + ईश	=	गिरीश	(इ + ई = ई)
नदी + ईश	=	नदीश	(ई + ई = ई)
भानु + उदय	=	भानूदय	(उ + उ = ऊ)
पितृ + ऋण	=	पितॄण	(ऋ + ऋ = ॠ)

(ii) गुण संधि :-

यदि अ अथवा आ के पश्चात् ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, ई, उ, ऊ आदि आए तो अ और इ मिलकर ए, अ और उ मिलकर ओ, अ और ऋ मिलकर अर हो जाते हैं।

जैसे - राम + इन्द्र = रामेन्द्र (अ + इ = ए)
महा + ईश = महेश (आ + ई = े)

(iii)- वृद्धि सन्धि ⇒ यदि अ, आ वर्ण के बाद ए, ऐ अथवा ओ, औ आये तो अ, आ और ए, ऐ मिलकर ऐ तथा अ, आ और ओ, औ मिलकर औ हो जाते हैं।

जैसे –

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

महा + औषध = महौषध (आ + औ = औ)

(iv) यण् सन्धि ⇒ यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, उ, ऋ के बाद कोई असमान स्वर आये तो इ का य् उ का व् तथा ऋ का र् हो जाता है।

उदाहरणार्थ –

इ + अ = य + अ = य्, दि + अपि = यद् + य् + अपि = यद्यपि

इ + आ = य् + आ = या, अभि + आरोप = अभ् + य् + आरोप = अभ्याशेप

इ + उ = य् + उ = यु, अभि + उक्ति = अभ् + य् + उक्ति = अभ्युक्ति

उ + आ = व् + आ = वा, सु + आगतम् = स् + व् + आगतम् = स्वागतम्

ऋ + आ = र + आ = रा, मातृ + आज्ञा = मात् + र् + आज्ञा = मात्राज्ञा

(v) अयादि सन्धि ⇒ यदि ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् कोई स्वर आये तो ए, का अय ऐ का आय् ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है।

जैसे –

शे + अन = शयन (ए + अ = अय्)
ने + अन = नयन (ए + अ = अय्)
गै + अक = गायक (ऐ + अ = आय्)
पौ + इत्र = पवित्र (औ + इ = आव्)
भौ + अन = भवन (औ + अ = अव्)
नौ + इक = नाविक (औ + इ = आव्)
भौ + उक = भावुक (औ + उ = आव्)

2. व्यंजन संधि :–

व्यंजन के साथ व्यंजन अथवा स्वर के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं इसके नियम निम्न प्रकार हैं।

(i) त् के आगे च, छ होने पर त् का च् हो जाता है जैसे –

उत् + चरण = उच्चरण (त् = च्)
सत् + चरित्र = सच्चरित्र (त् = च्)
उत् + छिन्न = उच्छिन्न (त् = च्)

(ii) त् के पश्चात् ज आने पर त् का ज् हो जाता है जैसे –

सत् + जन = सज्जन (त् = ज्)

(iii) त् के बाद ल आने पर त् का ल् हो जाता है जैसे –

उत् + लेख = उल्लेख (त् = ल्)
उत् + लास = उल्लास (त् = ल्)

(iv) त् के बाद न अथवा म होने पर त् का न् हो जाता है जैसे –

जगत् + नाथ = जगन्नाथ (त् = न्)

(v) त् के बाद श् आने पर त् का च्, श का छ् हो जाता है जैसे –

उत् + शृंखला = उच्छृंखल (त् = च्)
उत् + श्वास = उच्छ्वास (श् = छ्)

(vi) त् के पश्चात् ह् आए तो त् का द् व ह का ध् हो जाता है जैसे –

उत् + हत = उद्धत (त् = द्, ह् = ध्)

(vii) यदि वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त, प के पश्चात् कोई स्वर अथवा वर्ग के तीसरे वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब अथवा य, र, ल, व ह में से कोई वर्ण आए तो क्, च्, ट्, त्, प् का क्रमशः ग्, ज्, ड् द्, ब् हो जाता है। जैसे –

क वर्ग ग च वर्ग ज ट वर्ग ड त वर्ग द प वर्ग ब

वाक् + दान = वाग्दान क् ⇒ ग् (तीसरा वर्ण)
दिक् + अन्त = दिगन्त क् ⇒ ग् (स्वर)
अच् + अन्त = अजन्त च् ⇒ ज् (स्वर)
षट् + आनन = षडानन ट् ⇒ ड् (स्वर)
जगत् + बन्धु = जगद् बन्धु त् ⇒ द् (तीसरा वर्ण)
जयत् + रथ = जयद्रथ त् ⇒ द् + र (द वर्ण)
उत् + गार = उद्गार त् ⇒ द् (तीसरा वर्ण)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3. विसर्ग संधि :-

विसर्ग के बाद जब स्वर या व्यंजन आ जाये तब जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि के उदाहरण -

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल
निः + अक्षर = निरक्षर
निः + पाप = निष्पाप

विसर्ग संधि के 10 नियम होते हैं।

1. विसर्ग के साथ च या छ के मिलन से विसर्ग के जगह पर 'श' बन जाता है। विसर्ग के पहले अगर 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा र, य, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। उदाहरण:-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल
अध्यः + गति = अध्योगति
मनः + बल = मनोबल
निः + चय = निश्चय
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
ज्योतिः + चक्र = ज्योतिश्चक्र
निः + छल = निश्छल
तपश्चर्या = तपः + चर्या
अन्तश्चेतना = अन्तः + चेतना
हरिश्चन्द्र = हरिः + चन्द्र
अन्तश्चक्षु = अन्तः + चक्षु

१. विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र् या र हो जाता है। विसर्ग के साथ 'श' के मेल पर विसर्ग के स्थान पर भी 'श्' बन जाता है।

दुः + शासन = दुश्शासन
यशः + शरीर = यशश्शरीर
निः + शुल्क = निश्शुल्क
निः + आहार = निराहार
निः + आशा = निराशा
निः + धन = निर्धन
निश्श्वास * = निः + श्वास
चतश्श्लोकी = चतुः + श्लोकी
निश्शंक = निः + शंक

२. विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। विसर्ग के साथ ट, ठ या प के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'ष्' बन जाता है।

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
चतुः + टीका = चतुष्टीका
चतुः + पाटि = चतुष्पाटि
निः + चल = निश्चल
निः + छल = निश्छल
दुः + शासन = दुश्शासन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4. विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है यदि विसर्ग से पहले वाले वर्ण में अ या आ के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर हो तथा विसर्ग के साथ मिलने वाले शब्द का प्रथम वर्ण क, ख, प, फ में से कोई भी हो तो विसर्ग के स्थान पर 'ष' बन जायेगा।

नि: + कंलक = निष्कलंक
दु: + कर = दुष्कर
आवि: + कार = आविष्कार
चतु: + पथ = चतुष्पथ
नि: + फल = निष्फल
निष्काम = नि: + काम
निष्प्रयोजन = नि: + प्रयोजन
बहिष्कार = बहि: + कार
निष्कपट = नि: + कपट
नम: + ते = नमस्ते
नि: + संतान = निस्संतान
दु: + साहस = दुस्साहस

5. विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में अ या आ का स्वर हो तथा विसर्ग के बाद क, ख प, फ हो तो संधि होने पर विसर्ग भी ज्यों का त्यों बना रहेगा।

अध: + पतन = अध: पतन
प्रात: + काल = प्रात: काल
अन्त: + पुर = अन्त: पुर

पयः क्रम = पयः + क्रम
रजः कण = रजः + कण
तपः पूत = तपः + पूत
पयः पान = पयः + पान
अन्तः करण = अन्तः + करण

विसर्ग संधि के अपवाद (1)

भाः + कर = भास्कर
नमः + कार = नमस्कार
पुरः + कार = पुरस्कार
श्रेयः + कर = श्रेयस्कर
बृहः + पति = बृहस्पति
पुरः + हूत = पुरस्हूत
तिरः + कार = तिरस्कार
निः + कलंक = निष्कलंक
चतुः + पाद = चतुष्पाद
निः + फल = निष्फल

6. विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। विसर्ग के साथ त या थ के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'स' बन जायेगा।

अन्तः + तल = अन्तस्तल
निः + ताप = निस्ताप
दुः + तर = दुस्तर
निः + तारण = निस्तारण
निस्तेज = निः+तेज
नमस्ते = नमः + ते

मनस्ताप = मनः + ताप
बहिस्थल = बहिः + थल
निः + रोग = निरोग, निः + रस = नीरस

7. विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। विसर्ग के साथ 'स' के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'स' बन जाता है।

निः + सन्देह = निस्सन्देह
दुः + साहस = दुस्साहस
निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ
दुः + स्वप्न = दुस्स्वप्न
निस्संतान = निः + संतान
दुस्साध्य = दुः + साध्य
मनस्संताप = मनः + संताप
पुनस्स्मरण = पुनः + स्मरण
अंतः + करण = अंतःकरण

8. यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'इ' व 'उ' का स्वर हो तथा विसर्ग के बाद 'र' हो तो संधि होने पर विसर्ग का तो लोप हो जायेगा साथ ही 'इ' व 'उ' की मात्रा 'ई' व 'ऊ' की हो जायेगी।

निः + रस = नीरस
निः + रव = नीरव
निः + रोग = नीरोग
दुः + राज = दूराज
नीरस = निः + रस
नीरज = निः + रज

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नीरन्ध्र = निः + रन्ध्र
चक्षूरोग = चक्षु: + रोग
दूरम्य = दु: + रम्य

9. विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'अ' का स्वर हो तथा विसर्ग के साथ अ के अतिरिक्त अन्य किसी स्वर के मेल का विसर्ग का लोप हो जायेगा तथा अन्य कोई परिवर्तन नहीं होगा।

अत: + एव = अतएव
मन: + उच्छेद = मनउच्छेद
पथ: + आदि = पथआदि
तत: + एव = ततएव

10. विसर्ग से पहले वाले वर्ण में 'अ' का स्वर हो तथा विसर्ग के साथ अ, ग, घ, ङ, ज, झ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह में से किसी भी वर्ण के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'ओ' बन जायेगा।

मन: + अभिलाषा = मनोभिलाषा
सर: + ज = सरोज
वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध
यश: + धरा = यशोधरा
मन: + योग = मनोयोग।
अध: + भाग = अधोभाग।
तप: + बल = तपोबल
मन: + रंजन = मनोरंजन
मनोनुकूल = मन: + अनुकूल
मनोहर = मन: + हर

तपोभूमि = तपः + भूमि
पुरोहित = पुरः + हित
यशोदा = यशः + दा
अध्योवस्त्र = अधः + वस्त्र

विसर्ग संधि के अपवाद (२)

पुनः + अवलोकन = पुनरवलोकन
पुनः + ईक्षण = पुनरीक्षण
पुनः + उद्धार = पुनरुद्धार
पुनः + निर्माण = पुनर्निर्माण
अन्तः + द्वन्द्व = अन्तर्द्वन्द्व
अन्तः + देशीय = अन्तर्देशीय
अन्तः + यामी = अन्तर्यामी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

संधि

प्र-1 'सावधान' में कौन सी संधि है ?
(अ) दीर्घ संधि
(ब) गुण संधि
(स) वृद्धि संधि
(द) यण संधि

(अ)
व्याख्या :— सावधान
स + अवधान = अ + अ = आ

प्र-2 सम् + अनु + अय = ?
(अ) समान्वय
(ब) समनअय
(स) समुनअय
(द) समन्वय

(द)

प्र-3 'महेन्द्र' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए ?
(अ) महा + इन्द्र
(ब) महि + इन्द्र
(स) महा + ऐन्द्र
(द) महि + ऐन्द्र

(अ)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्र०-4. महौषधि में कौन सी संधि है?
(अ) यण संधि
(ब) गुण संधि
(स) वृद्धि संधि
(द) दीर्घ संधि

(स)

प्र०-5. मात्राज्ञा में कौन सी संधि विच्छेद है?
(अ) यण संधि
(ब) दीर्घ संधि
(स) गुण संधि
(द) वृद्धि संधि

(अ)

प्र०-6. अन्विति का संधि विच्छेद कीजिए।
(अ) अन + इति
(ब) अनु + इति
(स) अन + विति
(द) अनु + विति

(ब)

प्र०-7. नयन का संधि विच्छेद कीजिए?
(अ) ने + अन
(ब) न + यन
(स) न + इन
(द) ने + यन

(अ)

प्र०-8. विधायिका में कौन सी संधि है?
(अ) गुण संधि
(ब) अयादि संधि
(स) दीर्घ संधि
(द) यण संधि

(ब)

प्र०-9. अधि + अक्ष = ?
(अ) अधीच्छ
(ब) अधीक्ष
(स) अध्यच्छ
(द) अध्यक्ष

(द)

प्र०-10. भौ + इष्य = ?
(अ) भविष्य
(ब) भाविष्य
(स) भौविष्य
(द) भोष्य

(अ)

प्र०-11. यण संधि का उदाहरण है?
(अ) एकैक
(ब) व्यर्थ
(स) भवन